।।श्रीः।।
।।श्री गुरवे नमः।।
।।श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।।

श्रीमहागणपति पूजन

समस्त प्रकार की पूजा में विघ्न निवारणार्थ, अभीष्ट प्राप्ति एवं साधना को निर्विघ्न पूर्ण करने हेतु श्रीगणपति की पूजा एक अनिवार्य अङ्ग है। दशमहाविद्या की सपर्या में श्रीगुरुपूजन पश्चात् श्रीगणपति की पूजा की जाती है। अलग-अलग विद्याओं में श्रीगणपति के नाम भी अलग-अलग हैं। विद्वानों का मत है कि श्रीसिद्धलक्ष्मीगणपति की पूजा सभी दश महाविद्याओं में मान्य है। श्रीविद्या की सपर्या में यह अनिवार्य ही है। माता बगलामुखी की सपर्या में हरिद्रागणपति की पूजा का विधान है। शास्त्रों में श्रीगणपति के अनेक नामों से अनेक पूजा विधान हैं जैसे एकाक्षर गणपति, क्षिप्र गणपति, उच्छिष्ट गणपति, शक्ति गणपति, हेरम्ब गणपति, श्वेतार्क गणपति, कुमार गणपति, राज गणपति, बुद्धि गणपति, मोदक गणपति, वल्लभा गणपति, सन्तान गणपति, योग गणपति, विजय गणपति, स्वर्णाकर्षण चिन्तामणि गणपति, दुर्गा गणपति, विरि गणपति, अर्क गणपति, कुक्षि गणपति, त्रैलोक्यमोहन गणपति, गुरु गणपति, लक्ष्मी विनायक, वक्रतुण्ड गणपति, तरुण गणपति, नर्तन गणपति, वामन गणपति, अभीष्टवरद महागणपति , मोहन गणपति, शिवावतार गणपति, विघ्नराज गणपति, इत्यादि। इन सभी गणपति के मन्त्रों में भिन्नता है। विषय विस्तार के कारण इन सभी का विस्तृत विवरण दे पाना सम्भव नहीं है फिर भी सभी के मूल मन्त्र आगे दिए जा रहे हैं। जिज्ञासु अन्य विविध शास्त्रों से लाभान्वित हो सकते हैं। यहाँ पर श्री सिद्धलक्ष्मी गणपति (इन्हें वल्लभामहागणपति भी कहा जाता है।), हरिद्रागणपति एवं उच्छिष्टगणपति के पूजन का विधान स्पष्ट किया जा रहा है। साधकगणों को इस विधान से समुचित मार्गदर्शन मिल सकेगा।

भगवती पराम्बा की सपर्या अपने आप में ही विस्तार लिए हुए है। साधकगण समयानुसार श्रीगणपति का विस्तार से पूजन कर सकते हैं। श्रीगणपति की षोडशोपचार पूजा मूलमन्त्र के साथ पुरुषसूक्त से सम्पन्न करें। श्रीगणपति का अभिषेक-कर्म पुरुषसूक्त एवं गणपत्यथर्वशीर्षोपनिषद् द्वारा सम्पन्न करें। श्रीगणपति की कई स्तुतियाँ विविध ग्रन्थों में उपलब्ध है। यहाँ पर कुछ महत्त्वपूर्ण स्तुतियों का संकलन ही दिया जा रहा है। श्री गुरु-चरणों की अनुकम्पा प्राप्त करके साधनापथ की ओर अग्रसर होने वाले साधकों को श्रीमहागणपति की साधना आवश्य करनी चाहिए क्योंकि साधना के लक्ष्य तक पहुँचने हेतु मार्ग में आने वाले विघ्नों का अप्सारण तथा श्रीमहागणपति का मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त करना साधक का प्रथम कर्तव्य है। श्रीविद्या उपासना में श्रीमहागणपति क्रम नाम से पद्धति का विस्तार है। ज्यादा विस्तार के प्रपंच में न पड़ते हुए श्रीमहागणपति की सपर्या के स्वीकार्य मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। दश महाविद्या की पूजा में श्रीमहागणपति की पूजा का एक स्वीकार्य मार्ग यहाँ पर दिया जा रहा है।

श्रीमहागणपति ध्यान एवं पूजन

गुरु पूजनोपरान्त अपने दाहिनी ओर गणपति का ध्यान करें । श्रीमहागणपति के विविध नाम, स्तुतियाँ हैं तथापि अलग-अलग नामों में श्रीगणेश की पूजा के विधान समान ही हैं, केवल मूलमन्त्र में भिन्नता हो जाती है। ध्यान-स्तुति-प्रार्थना-नामावलि सभी के लिये स्तुत्य एवं लाभकारी हैं। यहां पर श्रीविद्या के अनुरूप श्री महालक्ष्मी-गणपति के मन्त्रों के साथ मानसिक पूजा बतलाई जा रही है जिसे उचित मुद्राओं के साथ करना होता है। साधकगण विस्तार से बाह्यपूजा करना चाहें तब पुरुषसूक्त से श्रीगणेश का मूलमन्त्र प्रयुक्त करके षोडशोपचार पूजा कर सकते हैं जिसका उल्लेख पहले ही किया जा चुका है। साथ में अभिषेक कर्म आदि सम्पन्न कर सकते हैं, यह साधक के पास उपलब्ध समय और सामर्थ्य पर निर्भर है। यहाँ दिग्दर्शन मात्र कराया जा रहा है। यथा, विनियोग करें -

विनियोग - अस्य श्रीमहागणपतिमहामन्त्रस्य गणक ऋषिः, निचृद्गायत्रीच्छन्दः, महागणपतिर्देवता, महागणपति पूजने विनियोग।

अब न्यास करन्यास एवं हृद्यादिन्यास करें -

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ गां	**अङ्गुष्ठाभ्यां नमः**	-	**हृदयाय नमः ।**
श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ गीं	**तर्जनीभ्यां नमः**	-	**शिरसे स्वाहा ।**
श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ गूं	**मध्यमाभ्यां नमः**	-	**शिखायै वषट् ।**
श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ गैं	**अनामिकाभ्यां नमः**	-	**कवचाय हुम् ।**
श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ गौं	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः**	-	**नेत्रत्रयाय वौषट् ।**
श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ गः	**करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः**	-	**अस्त्राय फट् ।**

श्रीमहागणपति का ध्यान करें-

बीजापूर - गदेक्षुकार्मुकरुजा - चक्राब्जपाशोत्पल,
ब्रीह्यग्रस्व-विषाणरत्न - कलश - प्रोद्यत्कराम्भोरुहः ।
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरयाश्लिोष्टो ज्वलद्भूषया,
विश्वोत्पत्ति- विपत्ति-संस्थितिकरो विघ्नेश इष्टार्थदः ।।

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।

अब निम्नानुसार मानसिक भाव एवं मुद्राओं से पञ्चोपचार पूजन करें-

श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये लं पृथिव्यात्मकं गन्धं कल्पयामि नमः ।
श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये हं आकाशात्मकं पुष्पं कल्पयामि नमः ।
श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये यं वाय्यात्मकं धूपं कल्पयामि नमः ।
श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये रं वह्नयात्मकं दीपं कल्पयामि नमः ।
श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये वं अमृतात्मकं नेवेद्यं कल्पयामि नमः ।
श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये सं सर्वात्मकं ताम्बूलं कल्पयामि नमः ।

इसके पश्चात् निम्न श्रीविद्या गणपति के मूल-मन्त्र का यथाशक्ति जप करके स्तोत्र पाठ करें -

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।

इसके पश्चात् श्रीगणपति स्तवराज का पाठ, श्रीगणपति के विविध नामों से पुष्पार्चन आदि कार्य सम्पन्न करें । पाठ पश्चात् गणपति की सात मुद्रायें हैं - क्रमशः दन्त, पाश, अङ्कुश, विघ्न, परशु, मोदक, और बीजापुर मुद्रा दिखावें । पुष्प चढाकर प्रणाम करें।

श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित-श्रीमहागणपतये नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।।